# अध्याय - 10

| 1. | **प्रार्थना** |
|---|---|

**दल के अगुवेः** अपने दल और चेले बनाने के पाठ्यक्रम के लिए स्वयं को परमेश्वर के सामने समर्पित करें।

| 2. | **गवाही बाँटना** (20 मिनट) | ***[शान्त समय]*** **युहन्ना 4:23 – 7:52** |
|---|---|---|

**बारी-बारी पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें)** संक्षेप में वही बोले जो परमेश्वर के उस वचन से जो आपको दिया गया था (युहन्ना 4:23 – 7:52तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

| 3. | **याद करना** (20 मिनट) | ***निश्चितता*** **मार्गदर्शन निश्चित है - नीति वचम 3:**5-6 |
|---|---|---|

## क. प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

**पढ़े** व्यवस्थाविवरण6:4-9
**खोजें और विचार-विमर्श करेः** बाइबल के पदों को याद करना क्यों ज़रूरी है?(चाहे वे लेखाँश हो या अध्याय)
**लिख लेः** याद किए गए बाइबल के पद आप को इस योग्य बना देंगे कि आप अपने परिवार में बाइबल के वचनों द्वारा स्वयं को और अपने परिवार को अपनी धारणा मनवा लोगे।।

---

## ख. मनन करना ( बाइबल के एक लेखाँश पर)

**एक सफेद काग़ज़ पर या श्यामपट पर याद करने वाला पद लिख कर रख लें।**

| **परमेश्वर का मार्गदर्शन निश्चित है**<br>**नीतिवचन 3:5-8** |
|---|
| **तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा करना**<br>**उसी को स्मरण करके सब काम करना, वही तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा.**<br>**नीतिवचन 3:5-8** |

**काग़ज़ के पिछली तरफ बाइबल का का संदर्भ वचन लिख दें।**

### 1. अपने पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा रखें।

परमेश्वर पर भरोसा रखने का अर्थ है कि हम उसे अपने जीवन की नींव बना लें या अपना पूरा जीवन देख-भाल के लिए उसके हवाले कर दें। इसका अर्थ है कि हम केवल उस पर निर्भर रहें कि वह हमें बचा लेगा, हमारा निर्माण करेगा और हमारा मार्गदर्शन करेगा। हमें केवल उसके वचन का सही प्रतिउत्तर देना है।
यह सम्भव नहीं हैं कि हम किसी इमारत को आधी नींव पर बना सकें। ऐसे ही एक सामर्थी मसीही का निर्माण भी

नींव पर नहीं किया जा सकता है। यह सम्भव नहीं है कि हम परमेश्वर पर आधे हृदय से भरोसा रखे। हमें हमेशा मनुष्य की समझ पर भरोसा नहीं करना चाहिए। असल में हमें हर बार लगातार मनुष्य की समझ को समझने से इन्कार करना चाहिए। हमें केवल स्वयं को केवल परमेश्वर को समर्पित कर देना चाहिए और उसकी समझ पर भरोसा करना चाहिए। हमें अभ्यास करना चाहिए कि हम परमेश्वर के नज़रिये से पृथ्वी की चीज़ों को देखें न कि पृथ्वी के नज़रिये से। (भजन 73:16-17)

**2. अपने सभी मार्गों में परमेश्वर को मान्यता दें।**

हम कैसे जाने कि परमेश्वर हमारे सभी मार्गों में साथ है?
कभी भी अपने मसीही होने पर शर्मिन्दा न हों। और न ही मसीही तरीके से व्यवहार करने पर लज्जा अनुभव करें। (मत्ती 10:32-33)
कुछ करने से पहले हर महत्त्वपूर्ण विषय के लिए बाइबल का अध्ययन करें। (प्रेरितों के काम 17:11)
कुछ भी करने या कहने से पहले प्रार्थना करें। (नहेम्याह 1:11)
हर समय परमेश्वर की खोज करते रहे और जो भी करें उसकी महिमा के लिए करे। 1 कुर. 10:31)

**3. परमेश्वर हमारे मार्गों को सीधा करता है।**

कभी-कभी परमेश्वर हमारी योजनाओं कोव् सफल करता है। (नीति वचन 16:3)
कभी कभी परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हमारे साथ शान्ति से रहने देता है। (नीति वचन 16:7)
कभी कभी परमेश्वर बन्द दरवाज़ों और दिलों को खोलता है। (कुलु 4: 2-4)

---

## ग. याद करना और पुनरावलोकन

**1.लिखोः** अपनी कापी के एक खाली पेज पर बाइबल का वचन लिखें।
**2.याद करोः** बाइबल का वचन प्रार्थना के उत्तर का आश्वासन पाने की सही राह है।
**3.पुनरावलोकन** दो-दो के दल बना कर एक दूसरे के आखरी याद किए वचन की जाँच करें।

| | | |
|---|---|---|
| **4.** | **बाइबल अध्ययन** (70 मिनट) | ***जीवन के विषय में प्रश्न***<br>**मैं कहाँ जा रहा हूँ? (प्रकाशितवाक्य 21:1 – 22:6)** |

**शिक्षा देः** प्रकाशितवाक्य को एक विनाश, पर्दा उठाने, और प्रकटीकरण की किताब माना जाता है जो यीशु मसीह के संदेश को दर्शन के रूप में, चिन्हों और अंकों के द्वारा प्रकट करती है। यीशु मसीह हमें स्वयं वह कुंजी देते हैं कि उस पुस्तक को कैसे समझा जाए। और वे कौन से नियम हैं जिसके आधार पर उसे कैसे समझना है।

### प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या के लिए 8 कुंजियाँ या नियम

**पहली कुंजीः यह पुस्तक भविष्यवाणी की पुस्तक है जो यीशु मसीह की घोषणा करती है।**

**पढ़ेः** प्रकाशित वाक्य 22:6; 19:10, प्रभु यीशु मसीह मध्यस्थ है बाइबल के हर प्रकटीकरण के लिए। उसका भी जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 1:1 में लिखा है। प्रभु यीशु मसीह हर पुराने नियम के भविष्द्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है। (प्रकाशित वाक्य 22:6) खास ज़ोर इस बात पर दिया गया है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने जो भविष्यदवाणियाँ की थी वे परमेश्वर के रूप में यीशु मसीह के द्वारा ही दी गई थीं। अर्थात यीशु मसीह ही पुराने नियम का परमेश्वर था जो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के द्वारा उस परमेश्वर के विषय में बोले थे।

यीशु मसीह की गवाही जैसा प्रकाशितवाक्य 19:10 में लिखा है कि वह भविष्यद्वाणी की आत्मा है। अर्थात यीशु मसीह की गवाही जो कुछ भी पुराने नियम मे भविष्यद्वक्ताओं नें उसकी आत्मा के द्वारा भविष्यद्वाणियाँ की थी (पढ़े 1 पतरस 1:9-12) और जो नए नियम में उसकी आत्मा के द्वारा प्रेरितों ने की थी (पढ़े युहन्ना 16:13-15) सो पुराने नियम और नए नियम के लेखक और कोई नहीं है वरन केवल यीशु मसीह ही हैं। (1पतरस 1:9-12; 2 तिमु. 3:16) मुख्य ज़ोर प्रकाशितवाक्य 19:10 में यही है जो यीशु मसीह ने परमेश्वर के विषय, अपने विषय में, आने वाले मसीहा के विषय में और पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों के विषय में जो इस्रायल है और उन में संसार के हर राष्ट्र से अन्य विश्वासियों को जोड़ने के विषय में जो उस पर विश्वास करेंगे लिखा है। (पढ़े उत्पत्ति 22:18; मत्ती28:19) इस लिए परमेश्वर का राज्य और कलीसिया ही वास्तव में वह आत्मा है या अन्तः -करण की बात है जो बाइबल की भविष्यदवाणी हैं। (प्रकाशितवाक्य 19:10)

भविष्यद्वाणी करने का शाब्दिक अर्थ है किसी बात को होने से पहले बोल देना, घोषणा कर देना या प्रचार कर देना। पुराना नियम ऐसे भविष्द्वक्ताओं को चेतावनी देता है जो अपने मन से, दश्नों की भविष्यद्वाणियाँ करते हैं कि वे ऐसा न करें।(यर्मियाह 23:16-32) नया नियम भी बहुत से झूठे भविष्दवक्ताओं के विषय में अपने मुख से झूठी भविष्यद्वाणी करने वालों को चेतावनी देता है। (मत्ती 24:24) असली भविष्यदवाणी तो यीशु की घोषणा करना है और जो कुछ भी नए नियम में लिखा है उसकी घोषणा करना है। एक मसीही को केवल उसी की घोषणा करनी चाहिए। किसी भी मसीही को उससे परे नहीं जाना है जो बाइबल में लिखा है। (1 कुर. 4:6;प्रकाशितवाक्य 22:18-19)

दूसरी तरह से कहें तो भविष्यद्वाणी का आत्मिक वरदान इस लिए होता है कि आप उस बात की घोषणा करें कि जो यीशु ने अपने विषय में आप पर प्रकट किया था। उसके शब्द और बाइबल के वचन। इस लिए बाइबल की भविष्यद्वाणी दूसरे लोगों, देशों (इस्राएल और अन्यजाति के लोगों) के भविष्य के विषय में अपने मन से नहीं की जाती है। इसके स्थान पर यीशु मसीह की घोषणा और उसके संदेश की घोषणा ही सही भविष्यद्वाणी होगी। सही भविष्यद्वाणी का उदाहरण पुराने नियम में भविष्यद्वकाताओं ने जो भविष्यद्वाणी यीशु के विषय में की थी वही वास्तविक है। जो नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा पूरी की गई थी। यीशु मसीह चाहे जो भी थे पर उन्होंने क्या किया था और क्या कहा था, पर पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को यीशु ने ही पूरा किया था। (मत्ती5:17) और जो कुछ यीशु मसीह ने प्रकट किया, सिखाया और आज्ञाएँ दीं वही सब आज नए नियम में लिखा गया है। और यह वही है जो पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता अपनी धुँधली सी घोषणा के द्वारा कहना चाहते थे। जैसा मत्ती 5:17;प्रेरितों के काम 3:18;कुलु. 2:17;इब्रानियों 8:6; 10:1; 1 पतरस 1:10-12 में लिखा है पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता वैसे ही बोलना चाहते थे।

इस लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को बाइबल की रौशनी में ही समझाना चाहिए। वैसे ही पुराने नियम को भी नए नियम की रौशनी में समझना चाहिए।

## <u>दूसरी कुंजी - इस पुस्तक का हर संदेश हर पढ़ने वाले को आशीष देने के लिए लिखा गया है</u>

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 1:3; 22:6,10 - प्रकाशित वाक्य का उद्देश्य लोगों को डरा कर दूर भगाना नहीं है। यीशु ने कहा था, **"**धन्य है वह जो भविष्यद्वाणी के इन वचनों को पढ़ेगा क्योंकि यह एक घोषणा है। धन्य हैं वे जो इसे सुनेंगे और उसे दिल में रखेंगे जो इस में लिखा है।**"**(1:3; 22:7) इस पुस्तक का संदेश इस सत्य को बताता है कि मसीह विजयी है और सारे मसीही यीशु मसीह के साथ विजयी लोगों से भी बढ़ कर हैं। (प्रकाशितवाक्य 17:14; रोमियो 8:37-39) यह संदेश मसीही लोगों को उत्साहित करना चाहता है जिससे मसीही लोग अपनी पीढ़ी में विशवास की एक अच्छी लड़ाई लड़ें। यह यीशु मसीह की और साथी विश्वासियों की अन्तिम विजय को प्रकट करता है। और यही यीशु मसीह के राज्य के अन्तिम चरण को स्थिर करता है। अर्थात नई पृथ्वी की घोषणा करता है। इस लिए इस पुसतक का संदेश हर किसी के लिए आशीष की घोषणा करता है।

**<u>तीसरी कुँजी - इस पुस्तक का संदेश शब्दों में मसीह के पहले आगमन से दूसरे आगमन तक है।</u>**

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 1:1,3; 22:6,10 जब यीशु मसीह प्रेरित युहन्ना से बात कर रहे थे तब कहा था, "प्रकाशन तो बहुत जल्द ही होगा।"इसलिए"भविष्यद्वाणी की इस पुस्तक के शब्दों की सील बन्द न करो क्योंकि उसका पूरा होने का समय बहुत पास है।"(प्रकाशितवाक्य 1:1,3; 22:6,10) इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी इस पुस्तक के दर्शन में प्रकट किया है उसे यीशु के पहली बार आने के समय से तुरन्त ही समझ लिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य का असर पूरे नए नियम के समय से यीशु की पहली से दूसरी आमद तक होगा। इसलिए प्रकाशितवाक्य के संदेश का लक्ष्य हर पीढ़ी के मसीहो के लिए है।

**<u>चौथी कुंजी - पुस्तक में दिए शाब्दिक चिन्ह वास्तविकताएँ हैं जो कि शब्दों से कहीं अधिक ऊँचे और महान हैं।</u>**

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 1:1,20; 5:6 यीशु ने कहा कि उसने अपना संदेश जो (प्रकाशितवाक्य 1:1) में दिया था। यह शब्द "यह वचन मैं ने तुम्हें बता दिया है।"यह मूल ग्रीक भाषा में इस का अर्थ है तुम्हें चिन्हों के द्वारा बता दिया हैएक काल्पनिक तथ्य है। इसी लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अनेक अंक और चिन्ह पाए जाते हैं। और इसी लिए हमें समझना है कि हर चिन्ह हमें किसके विषय में बता रहा है। उदाहरण के लिए प्रकाशितवाक्य 1:12-13, 16 में एक चिन्ह है जहाँ पर सात दीवटों के बीच एक मनुष्य खड़ा है और उसने सात सितारों को अपने दाहिने हाथ में उठा रखा है। प्रकाशितवाक्य 1:20 में यीशु मसीह स्वयं उन चिन्हों के अर्थ समझाते हैं। वे दीवट वास्तव में दीवट नहीं हैं वे तो 7 कलीसियाओं को दर्शाते हैं। और सात सितारे भी सितारे नहीं हैं वे स्वर्गदूत है जो सात कलीसियाओं के प्रतिनिधि हैं। और फिर प्रकाशितवाक्य के 5:6 में जिस मेमने का वर्णन है जिसे मार दिया गया है और जो सिंहासन की बीच में खड़ा है वह तो यीशु मसीह को दर्शाने का चिन्ह है। उस मसीह को जो क्रूस पर मारा गया था और जिसका पुनरोत्थान हुआ था।

**<u>पाँचवीं कुँजी - इस पुस्तक में प्रयोग किए गए अँक भी चिन्ह के रूप में अर्थ हैं। और वे शाब्दिक वास्तविक्ताएँ हैं जो उन अँको के मूल्यों से कहीं अधिक महान हैं।</u>**

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 5:6; 2:7- अँक 7 एक पवित्र अँक है। यह अंक दैविक सम्पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है। उत्पत्ति 2:1 पद कहता है परमेश्वर ने 6 दिन तक उत्पत्ति का कार्य किया और सातवें दिन विश्राम किया जो सम्पूर्ण दैविक सर्वोत्तम अँक का प्रतीक है। प्रकाशितवाक्य के 5:6 में लिखा है, "मेमने के सात सींग और सात आँखें हैं। जो कि परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं जिनको इस पृथ्वी पर अलग-अलग दृष्टिकोण को ध्यान में रख कर भेजा जाता है।"यह मसीह के पवित्र आत्मा के द्वारा इस संसार में सर्वसामर्थी और सर्वज्ञानी होने का प्रतीक है। और प्रकाशितवाक्य 2:7 में सात दीवट ऐतिहासिक सात कलीसियाओं का प्रतीक हैं जो एशिया में स्थिति हैं और जो प्रतीक हैं संसार की उन कलीसियाओं का जिनका उद्धार का इतिहास है। और प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में जो सात पत्रियाँ हैं जो सात कलीसियाओं को लिखी गई हैं वे मसीह की निजि पत्रियाँ हैं जो इतिहास में हर तरह की परिस्थिति में हर कलीसिया को लिखी गई हैं।

**<u>छटी कुँजी - सारी पुस्तक को सात समानान्तर भागों में बाँटा गया है और हर भाग प्रतीक है सम्पूर्ण नए नियम के समय काल का।</u>**

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 12:5; 14:14-16 जैसे कि चारों सुसमाचार में साथ-साथ यीशु के जीवन, कार्यों, मृत्यु और पुनरोत्थान की घोषणा की गई है इसी रीति से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पूरे नए नियम के समय काल के विषय में यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक का वर्णन भिन्न दृष्टिकोणों से किया गया है। उदाहरण के लिए पहले भाग में अध्याय 1 से 3 शुरू होता है यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरोत्थान और सिंहासन के सामने

विराजमान होले तक। (प्रकाशितवाक्य 1:5) और जिसका अन्त उन वायदों का उनके लिए पूरा होने से है जो उसके दूसरे आगमन पर विजय पा लेंगे। (प्रकाशितवाक्य 2:7; 3:12) यह भाग वर्णन करता है उस लड़ाकु कलीसिया का जो पूरे नए नियम के काल में स्थापित की गई थी। दूसरा भाग (अध्याय 4 से 7) शुरू होता है यीशु मसीह के पहले आगमन से जब यीशु ने अधिकार पाया था उद्धार को प्रकट करने का और उसे महान घटनाओं के द्वारा इतिहास में पूरा करने का। प्रकाशितवाक्य 5:1-10 समाप्त होता है मसीह के दूसरे आगमन के साथ जब वह न्याय करने आएगा। (प्रकाशितवाक्य 6:12-17) इस तीसरे भाग में पूरे नए नियम के दौरान पूरे संसार में कलीसिया के सताव का वर्णन है। चौथे भाग (अध्याय 12 -14) से शुरू होता है यहाँ पर यीशु मसीह के पहले आगमन जब वह जन्म लेता है और फिर स्वर्ग में उसका पुनरोत्थान होता है (प्रकाशितवाक्य 12:5) और इसका अन्त होता है उसके दूसरे आगमन पर जब वह अन्तिम न्याय के दिन धर्मी और अधर्मियों का न्याय करने आएगा। (प्रकाशितवाक्य 14:14) इस भाग में मसीह और उसकी कलीसिया की विजय का वर्णन है जो उसने उस पशु और उसके साथियों पर पाई थी। इस बात को नोट करें कि एकमात्र युद्ध तो तीसरे भाग में हुआ था जिसका वर्णन प्रकाशितवाक्य 11:7 में, भाग 4 में प्रकाशितवाक्य 13:7 में भाग 5 में प्रकाशितवाक्य 16:12-16 में, भाग 6 में प्रकाशितवाक्य 19:17-19 में और भाग 7 में प्रकाशितवाक्य 20:7-9 में किया गया है।

**<u>सातवीं कुँजी -पुस्तक से सात भाग नीचे से ऊपर उठते मौसम के क्रम में हैं।</u>**

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 2:27; 6:12-17; 16:17-21; 20:11-15 - हालाँकि प्रकाशितवाक्यकी सात कुँजियाँ समानान्तर रूप से यीशु की पहली आमद से लेकर उसकी दूसरी आमद तक साथ-साथ चलती हैं लेकिन उसमें आगे बढ़ने की घटनाओं पर ज़ोर दिया गया है जो यीशु की दूसरेआगमन से पहले घटेंगी। उदाहरण के लिए अन्तिम न्याय के दिन की ओर बढ़ने का वर्णन। भाग एक घोषणा करता है न्याय के दिन की (प्रकाशितवाक्य 2:27), भाग 2 (प्रकाशितवाक्य 6:12-17) भाग 3 (11:18) में अन्तिम न्याय का परिचय है। भाग 4 में (प्रकाशितवाक्य 14:14-20) भाग 5 में (16:17-21) और भाग 6 में (18:1-24) ये सभी अन्तिम न्याय के दिन को चिन्हों के द्वारा समझाते हैं। और भाग 7 (20:11-15) जो अन्तिम न्याय के दिन को सारे चिन्ह गिरा के दिखाता है कि तब क्या होगा। और यहाँ पर कलीसिया की आगे बढ़ती हुई अन्तिम स्थिति पर ज़ोर दिया है। (3:12-13; 7:9-17; 11:15; 14:1-5; 15:2-4; 19:1-10 और 21:1 - 22:5) और हर भाग के साथ पुस्तक आगे बढ़ती जाती है।और इस मे लिखे संदेश का हर भाग में आगे बढ़ने का एक संदेश निहित देता है।

**आठवीं कुँजी - प्रकाशिवाक्य 21:1 - 22:5 स्पष्ट करता है कि इस पृथ्वी पर आज के युग में यीशु मसीह के आने से पहले कलीसिया की सच्चाई क्या है और नई पृथ्वी की सम्पूर्ण वास्तविक्ता में कलीसिया की सच्चाई यीशु की दूसरे आगमन के बाद क्या होगी।**

**पढ़ेः** प्रकाशितवाक्य 21:2"स्वर्गीय यरुशलेम"चिन्ह है जो उन सब परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो यीशु की दूसरी आमद से पहले आज के युग में इस पृथ्वी पर बसे स्वर्ग में बसते हैं।(गलातियों 4:24-26;इब्रानियों 12:22-24) कुछ ऐसे क्रिया शब्दो का प्रयोग जो प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:5 में किया गया हैं उनका अर्थ है कि वह सब अभी भी हो रहा है और नया यरुशलेम नीचे आ रहा है। यीशु मसीह सब कुछ नया और वास्तविक बना रहे हैं, और मसीही लोग इस पृथ्वी पर विजय पा रहे हैं। (प्रकाशितवाक्य 21:2,5,7) "नया यरुशलेम "नकेवल एक चिन्ह है वरन वह तो परमेश्वर के लोगों का यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बाद नई पृथ्वी होने की पूरी वास्त्विकता को प्रकट करने का प्रतीक है।(प्रकाशितवाक्य 21:9-10) और वह तो इस बात का भी प्रतीक है परमेश्वर के उन लोगों की जो का आज की पृथ्वी पर यीशु के दूसरे आगमन से पहले ही उस सच्ची वास्तविक्ता और पहचान को प्रस्तुत करते हैं।

---

## बाइबल अध्ययन

बाइबल के अध्ययन के लिए पाँच कदमों का तरीका इस्तेमाल करें। साथ मिल कि प्रकाशितवाक्य 21:1 से 22:6 का अध्ययन करें।

**<u>पहला तरीका - पढें</u>** **परमेश्वर का वचन**

**पढ़ेः** आईए हम प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:5 एक साथ पढ़ें।

आईए हम मिल कर बारी बारी से एक वचन पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश समाप्त न हो जाए।

---

**<u>दूसरा तरीका - खोजें</u>** **अवलोकन**

**ध्यान देः** यहाँ पर कौन सा लेखाँश आप के लिए महत्त्वपूर्ण है?

या ऐसा कौन सा सच है इस लेखाँश में जिस ने आपके दिल को छू लिया है?

**लिखेः** लेखाँश में से एक या दो सत्यों को खोज निकालें। उनके विषय में सोचें और अपने विचार अपनी कापी में लिख दें।

**गवाही बाँटेः** (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें हों और कापी में अपने विचार लिख चुके हों, तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

**21:3-4**

**<u>खोज 1. परमेश्वर के साथ भविष्य में सम्बन्धः</u>**

इससे पहले कि नई पृथ्वी बनी थी परमेश्वर का निवास स्थानस्वर्ग था। जब कि हम लोग इस पृथ्वी पर हैं हालाँकि हम परमेश्वर तक यीशु मसीहपर विश्वास के द्वारा पहुँचसकते हैं। लेकिन वह अभी भी अदृष्य है। यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बाद नया स्वर्ग इस नई पृथ्वी पर होगा। और तब परमेश्वर का निवास अपने लोगों के बीच में होगा। और तब हम परमेश्वर को देख सकेंगे और हम उस तक पहुँच सकेंगे। उस नई पृथ्वी पर हमारा सम्बन्ध सब से महत्तवपूर्ण घटना होगी। तब हमारा सम्बन्ध परमेश्वर के साथ बहुत ही निजि और घनिष्ठ होगा। वह हमारे जीवन पर से इस धरती पर के हर पाप और दुख के दाग को मिटा देगा।वह हमारी आँखों से हर आँसु को पोंछ देगा। वह हमारे हर घाव को चंगा कर देगा जो मेरे पाप और दुख के कारण दाग़ बन गए है। वह मुझे लगातार जीवन की भरपूरी का एहसास देगा। वह मुझे ज्ञान और आनन्द की ज्योति में चलाएगा। और तब मै उसके मुख को देखूँगा।

**22:3-5**

**<u>खोज 2. परमेश्वर के लिए भविष्य के कार्य।</u>**

नई पृथ्वी पर परमेश्वर के लोग महत्तवपूर्ण तथा अर्थपूर्ण कार्यों में व्यस्थ होंगे। वे नई पृथ्वी को विरासत में पा जाएँगे और उस नई पृथ्वी पर राज्य करेगे और परमेश्वर की सेवा करेंगे। "अनन्त जीवन"कुछ भी अनन्त काल तक कुछ करना नहीं है वरन कुछ महत्त्वपूर्ण अनन्तकालीन करना ही कुछ है। मसीह के साथ सारी विश्वासियों के साथ मिल कर अब मैं परमेश्वर के राज्य को अन्तिम रूप में अर्थात नई पृथ्वी और नए स्वर्ग के रूप में विरासत में पा लेना। तब हम परमेश्वर के साथ मिल कर परमेश्वर के इस राज्य में राज करेंगे। अर्थात नई पृथ्वी पर। हम परमेश्वर के अधीन

सेवा करेंगे।तब काम की सारी परेशानियाँऔर मुश्किलें दूर कर दी जाएंगी। तब हम वैभव, महिमाऔर आदर उस राज्य में लेकर आएँगे।

---

**<u>तीसरा तरीका- प्रश्न</u>** **समझाना**

**ध्यान देः** इस लेखाँश में कौन सा ऐसा प्रश्न है जो आप इस दल से पूछना चाहेंगे?

आईए हम कोशिश करें कि प्रकाशित वाक्य 21:1 - 22:6 के सभीसत्यों को समझ सके और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।

**लिख लेः** अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।

**गवाही बाँटेः** (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और काफी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

**विचार-विमर्श करेः** (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)

नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ नोट्स भी हैं जिन पर विचार विमर्श किया गया था।)

**21:1**

**<u>प्रश्न 1. मसीह के दूसरे आगमन के बाद मसीही लोग स्वर्ग में रहेंगे या इस पृथ्वी पर?</u>**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** विश्वासियों की आत्माएँ जो शारीरिक रूप के मरने के बाद स्वर्ग में चले जाते हैं। जो वहाँ पर स्थित है जहाँ परमेश्वर रहते हैं(2 सैमुएल 12:23;सभोपदेशक 12:7; लूका 16:22; 2 कुर. 5:1; फिलिपियों 1:23; प्रकाशितवाक्य 20:4) स्वर्ग को फिर चिन्ह के रूप में स्वर्गलोग कहा गया है (लूका 23:43; 2 कुर.12:3-4; प्रकाशितवाक्य 2:7)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** मसीहों की नियति का अन्तिम पड़ाव स्वर्गलोक नहीं है। यह एक लोकप्रिय विश्वास है कि स्वर्गलोक मौज मस्ती का स्थान है पर यह सच नहीं है। मसीहों कीनियतिका अन्तिम पड़ाव नई पृथ्वी है जो स्वर्गलोक से कहीँ बेहतर होगी। पुराना स्वर्ग लोग तो पृथ्वी पर एक छोटी सी वाटिका था जिसमें फलों के पेड़ लगे थे और वह मध्य पूर्व में स्थित था। परन्तु नया स्वर्गलोक तो नई बना दी गई पूरी पृथ्वी होगी। (रोमियो 4:13; 8:19-21) पुराने स्वर्गलोक में शैतान मनुष्य में प्रवेश कर सकता था, और तब मनुष्य पाप कर सकते थे और वे आत्मिक, शारीरिक रूप से अनन्तकाल के लिए मर जाते थे। लेकिन नई पृथ्वी दो धार्मिकता का घर होगी। उस में कुछ भी अपवित्र प्रवेश नहीं करने पाएगा। (2 पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:27) नई पृथ्वी पर शैतान का नाम ओ नशान न होगा, नही पाप होगा और नही मृत्यु होगी। अन्तिम न्याय के दिन मसीह के स्वर्गदूत वह सब जो पाप उत्पन्न करता या दुष्ट कर्म करते हैं उसे खत-पतवार के समान परमेश्वर के राज्य से उखाड़ कर फेंक देंगे।(मत्ती 13:41) जो कोई भी मनुष्य या वस्तु पापी है उसका पर्दाफाश करके उसे आग द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा।पुरानी सृष्टि और पुरानी पृथ्वी जाती रहेगी और एक नई सृष्टि और नई पृथ्वी उसका स्थान ले लेगी। (2 पतरस 3:10-13)

---

**21:1**

**<u>प्रश्न 2. उसके बाद से समुद्र क्यों न रहेगा?</u>**

**नोट्सः**

**यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** समुद्र दुष्ट राष्ट्रों काचिन्ह है जो शान्त नहीं हैं और युद्ध करने में लगे हैं(यशायाह 8:7; 17:12) यह चित्र है दुष्ट ताकतों का जो गड़बड़ी फैला रही हैं और जीवन के लिए खतरा हैं। यह उन राष्ट्रों का प्रतीक है जो उस पशु की आराधना करते हैं जो समुद्र से बाहर निकला है।(क्रीस्ट विरोधी, प्रकाशितवाक्य

13:1; दानिएल 7:2-7)और वह महान वेश्या जो महान जल पर बैठती है (बबेल, प्रकाशितवाक्य 17:15)

**यीशु के दूसरे आगमन के बादः** तब कोई भी महासागर नहीं पाया जाएगा।लेकिन ऐसा नहीं लिखा है कि नई पृथ्वी पर समुद्र नहीं होंगे।वरन यह कि नई पृथ्वी पर क्रीस्ट-विरोधी राष्ट्र नहीं पाए जाएँगे और न ही वे लोग जो परमेश्वर को नही मानते हैं। और न ही नई पृथ्वी पर कोई दुष्ट और गड़बड़ी फैलाने वाली शक्तियाँहोंगी। तब कोई युद्ध नहीं होंगे केवल शान्ति होगी।

---

**21:2, 9-11**

**<u>प्रश्न 3. नया पवित्र नगर येरूशलेम जो स्वर्ग से उतरा है किस का प्रतीक है?</u>**

**नोट्सः बाबुल और यरुशलेमः** जहाँ एक ओर बाबुल अविश्वासी और अपवित्र लोगों का चिन्ह है और पुरानी पृथ्वी का प्रतीक है (प्रकाशितवाक्य 17:1-2,5,18) वहीं यरुशलेम परमेश्वर के विश्वासी और पवित्र लोगों और नई पृथ्वी का प्रतीक है।

**स्वर्गीय यरुशलेम और नया यरुशलेमः** स्वर्गीय यरूशलेम और नया यरुशलेम दोनो ही शाब्दिक रूप से कोई नगर नहीं है। वरन वह तो विश्वासियों के समाज (कलीसिया) का एक चिन्ह है। अन्तिम न्याय जो आकाश में होगा उसके बाद स्वर्गीय यरुशलेम जिस में मसीह, और सारे विश्वासी (कलीसिया) होंगे वह उतर कर नई पृथ्वी पर आ जाएगा। और वह ही नया यरुशलेम कहलाएगा। (प्रकाशितवाक्य 20:11 - 21:2) और परमेश्वर मसीह के रप में कलीसिया के साथ नई पृथ्वी पर वास करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 21:3)

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** सारे विश्वासी विशेष रूप से जिनको स्वर्गीय यरुशलेम कहते हैं (गलातियों 4:21 - 31; इब्रानियों 12:22-24; 13:14) पहले से ही उन को पुराने नियम में मसीह की दुल्हन कहा गया है। (यशायाह 54:1,5-6,11) नए नियम में उन्हें मेमने की दुल्हन कहा गया है। (प्रकाशितवाक्य 21:9-10; 2 कुर.11:2-3; इफीसियों 5:25 - 32)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** सभी विश्वासियो को विशेष रूप से नया यरुशलेम कहा गया है। (प्रकाशितिवाक्य 21:1-2,9-10) यीशु मसीह की दूसरी आमद के बाद नया यरुशलेम तो नई पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अन्तिम पक्ष का प्रतीक है। नए यरूशलेम का वर्णन महिमा शब्दों में किया गया है क्योंकि इस सृष्टि पर कोई भी इतना महिमा नहीं है जितनी उन लोगो की है जो मसीह के रूप में जीवित परमेश्वर के साथ आराधना करते हैं।

**नया यरूशलेम एक आदर्श और सर्वगुण समपन्न वास्तविक्ता है।**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** नया यरूशलेम वह आदर्श है जो दर्शाता है कि आज की इस पृथ्वी पर परमेश्वर के लोग कैसे होने चाहिए। इसी लिए कुछ क्रिया शब्द जिस रूप में प्रयोग किए गए है वह दिखाते हैं कि यह निरन्तर होता आ रहा है। नया यरुशलेम तो हमेशा से हमारे बीच उतरता रहा है। (जैसा कि मत्ती 6:10 में लिखा है, "तेरा राज्य आए।") मसीह तो हर समय चीज़ों और लोगों को नया बनाता आ रहा है। (2 कुर.5:17) मसीह तो उन्हें जो प्यासे हैं जीवन का जल दे रहा है(युहन्ना 7:37-38) और जीवन के पेड़ की पत्तियाँ सभी राष्ट्रों को चंगा कर रही हैं।(मत्ती 8:16-17 और प्रकाशितवाक्य 21:2,5,6; 22:2)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** नया यरूशलेम वह कटु वास्त्विकता है कि परमेश्वर के लोगउस नई पृथ्वी पर होंगे।इसी लिए दूसरे क्रिया शब्द भूत काल में पाए जाते हैः पहला स्वर्ग और पहली पृथ्वी जाती रही। अब न तो मृत्यु ही रहेगी और न हीपुरानी बातों पर रोना और पीटना होगा। और अब कोई श्राप न होगा। (प्रकाशितवाक्य 21:1,4; 22:3) जो कुछ भी बाइबल में लिखा है वह हो गया है / या हो चुका है। निश्चित क्रिया शब्द इस बात ज़ोर देते हैं कि ये सब से उत्तम नतीजे सदा आते रहेंगे। अनन्तकाल का परमेश्वर जो मसीह में शुरू से आखिर तक है गारंटी देता है कि यह

सबसे उत्तम वास्त्विकता लगातार रहेगी। (प्रकाशितवाक्य 21:6)

---

**21:7-8:**
**<u>प्रश्न 4 - विजय पा लेने का अर्थ क्या है?</u>**
**नोट्सः**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** "किसी पर विजय पाना"एक ज़िम्मेदारी का काम है और हर विश्वासी के लिए जो इस पृथ्वी पर है, एक चुनौती है। विजय पा लेना का अर्थ है कि आप हर परिस्थिति में यीशु मसीह के साथ जुड़े हुए है। इसका अर्थ है कि आप शैतान और इस पापी दुनियाँ को अपने से दूर रखते हैं। कि वह आपके परमेश्वर की संगति और सेविकाई से दूर न ले जाए। इसका अर्थ यह भी है कि हम युद्ध करते रहें कि मसीह की संगति सेभटक कर फिसल न जाएँ। इसका अर्थ यह भी है कि हम लगातार अधर्म का विरोध करें। वे विश्वासी जो विजय नहीं पाते हैं वे अविश्वासी हैं क्योंकि वे इस पृथ्वी की शक्ति, मशहूरी, मौज-मस्तीको उद्धार से और इस नई पृथ्वी से ऊपर रखते हैं। यीशु मसीह ने इस संसार पर विजय पा ली है (युहन्ना16:33) वे जो मानते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है वही संसार पर विजय पा सकेंगे। (1 युहन्ना 2:14) हर मसीही शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर मेमने के लहु से और उनकी गवाही से (प्रकाशितवाक्य 12:11 ही विजयपाएँगे उन पर जो उन से युद्ध करते हैं। (प्रकाशितवाक्य 17:14)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** हर विश्वासी यीश मसीह में जयवन्त से भी बढ़ कर है। (रोमियो 8:37)

---

**<u>प्रश्न 5. नगर के हर भाग का क्या अर्थ है?</u>**

**नोट्सः** जब प्रेरित युहन्ना ने नए यरुशलेम का वर्णन किया था तब वह एक दीवार और एक फाटक का वर्णन करता है, उस नगर की नींव और गलियों के विषय में बताता है। नगर के ये भाग नए यरुशलेम को अलग अलग दृष्टिकोणों से विश्वासियों का समाज बताता है।

---

**21:12,15,17**
**<u>प्रश्न 6. दीवार का अर्थ क्या है?</u>**

**नोट्सः** महान और ऊँची दीवार मसीहों के समाज (कलीसिया) की सुरक्षा, बचाव, और हिफाज़त का प्रतीक है। वह दीवार 144 क्युबिट चौड़ा। (जो मनुष्य के हाथ के माप से 65 मीटर) अँक भी चिन्ह होते हैं। जैसे अंक तीन प्रतीक है परमेश्वर का, अंक 4 प्रतीक है संसार का, अंक 12 पुराने नियम पर विश्वास करने वालों का प्रतीक है। (प्रकाशितवाक्य 21:12) या नए नियम से (प्रकाशितवाक्य 21:14) और फिर अंक 12x12 प्रतीक है सर्वगुण सम्पन्न होने का। इस रीति से हो सकता है कि अंक 144 परमेश्वर के संसार के उद्धार के कर्म का प्रतीक है जिस पर आक्रमण नहीं किया जा सकता है और जो पूरी तरह से सुरक्षित है।

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** सारे सच्चे मसीही सुरक्षित है और वे पूरी तरह से अपने जीवित परमेश्वर की संगति के द्वारा बचे हुए हैं। यीशु मसीह ने पहले से ही कह दिया था कि चुने हुओं को
धोखा देना सम्भव नहीं है। (मत्ती 24:24) उसने वायदा किया है, "कोई भी उनको मेरे हाथों से छीन कर नहीं ले जा सकता है।"(युहन्ना 10:28) और "उन में से एक भी नहीं खोया है।"(मत्ती 25:46)

---

**21:12,13,25**

**<u>प्रश्न 7. फाटकों का क्या अर्थ है?</u>**

**नोट्सः** फाटक इस बात का प्रतीक हैं कि आप परमेश्वर से संगति करने वाले लोगों के समाज में विश्वास के फाटक द्वारा प्रवेश कर रहे हैं। उन 12 गोत्रों के नाम जो फाटकों पर लिखे हैं इस बात का संकेत देते हैं कि जो परमेश्वर पर विश्वास करने वाले हैंवही वहाँ पर रहने पाएँगे। (विश्वासी मसीही, गलातियों 6:14-16; और याकूब 1:1)

**मसीह के पहले आगमन से पहलेः** ये फाटक कभी बन्द नहीं किए जाते हैं और विश्वासियों के समाज में प्रवेश करने के बहुत से अवसर होते हैं। ये फाटक हर दिशा में खुले हैं और वे संसार के हर राष्ट्रइकट्ठे करेंगे। (यशायाह 43:5-7; मत्ती 24:14; प्रकाशितकवाक्य 5:9) स्वर्गदूत इन फाटकों की रक्षा करते हैं जिससे कोई दुष्ट, अधर्मी और अविश्वासी इस नगर में प्रवेश न करने पाए।(प्रकाशिताक्य 21:27) पुराने नियम के हाबिल, हनोक, नूह, अब्राहम, दाऊद और दानिएल ने विश्वास के द्वारा इन फाटकों में प्रवेश किया था। (उत्पत्ति15:6; लूका 20:37-38) नए नियम के लोग जिन्होंने अपने कपड़े मेमने के लहु से धो लिए हैं उन्हें इस नगर में प्रवेशकरने काअधिकार है। (प्रकाशितवाक्य 22:14) अपनी मृत्यु से ले कर मसीह के दूसरे आगमन तक अवसर है कि वे विश्वासियो के समाज में प्रवेश कर सकें।(मत्ती 7:13-14;लूका 13:23-30)

**मसीह के दूसरे आगमन के समयः** ये फाटक बन्द कर दिए जाएंगे और तब कोई अवसर नहीं होगा उद्धार पाने का (मत्ती 25: 10-13; और 2 कुर. 6: 1-2; 13:5) इसका अर्थ यह हुआ कि केवल वही नाम जो यीशु मसीह की जीवन की पुस्तक में लिखे हैंवही उस नगर में प्रवेश करने पाएँगे।

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** ये फाटक फिर कभी बन्द न होंगे। यही इस बात का प्रतीक होगा हम परमेश्वर के साथ बिना किसी रुकावट के नई पृथ्वी पर संगति करने पाएँगे।

---

**12:14, 19-21**

**<u>प्रश्न 8. नींव का अर्थ क्या है?</u>**

नींव प्रतीक है सहारा देने का उस नगर को जो विश्वासियों के समाज का आधार है। उस नींव पर यीशु मसीह के 12 गोत्रों के नाम लिखे हैं जो इस बात को बताते हैं कि उन्होंने ऐतिहासिक रूप से मसीही कलीसिया की नींव रखी थी। (मत्ती 16:18-19, प्रेरितों के काम 1:8; इफिसियों 2:20; 3:5-6; प्रकाशितवाक्य 21:14) वे तो यीशु मसीह के चश्मदीद गवाह, और सुनने वाले गवाह होंगे (जो वास्तव में मसीही कलीसिया की नींव हैं)

**मसीह के पहले आगमन से पहलेः** प्रेरितों ने नियम के लेखों की घोषणा करके ऐतिहासिक कलीसिया की नींव डाली थी और लोगों को (अर्थात कलीसिया को) यीशु मसीह के पास और स्वर्गीय यरुशलेम के पास लाए थे। (गलातियों 4:26) वे कीमती पत्थर जो नींव को सजाते हैं (यशायाह 54:11-12; और प्रकाशितवाक्य 21:19-21) वे प्रतीक है परमेश्वर के उन अनेक बुद्धि-ज्ञान और गुणों का और परमेश्वर के सदगुणों की घोषणा कलीसिया ने की थी। (इफिसियों 3:10)

**मसीह के दूसरे आगमन के बाद** विश्वासियों का समाज (अर्थात उसका राज्य) फिर कभी भी हिलाया नहीं जा सकेगा क्यों परमेश्वर स्वयं उस नगर का वास्तुकार है और निर्माता है। (इब्रानियों 11:10; 12:28)

---

**21:16**

**प्रश्न 9. वह नगर एक क्यूब(घन) के आकार में क्यों है?**

**लिख लेः**

इस क्यूब (घन) का आकार उस मिलाप के तम्बू और सुलेमान के मन्दिर के पूर्वाभास के अनुसार था।

(1 राजा 6:20) पुराने नियम के समय में महा पवित्र स्थान जहाँ पर वाचा का संदूक रखा था उसे परमेश्वर का निवास स्थान माना जाता था। जहाँ पर वह अपनी पूरी महिमा के साथ रहते थे। (1 सैमुएल 4:4; 2 राजा 19:15;1 राजा 8:10-11) नए नियम में महा पवित्र स्थान स्वर्ग है जो परमेश्वर का निवास स्थान है (इब्रानियों 9:12,24)

**नए यरुशलेम भी क्यूब के आकार का है।**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** स्वर्गीय यरुशलेम (गलातियों 4:26) को परमेश्वर का मन्दिर कहा गया है। (2 कुर. 6:16; इफिसियों 2:22) और क्योंकि नया यरुशलेम, महा पवित्र स्थान के आकार में ही मन्दिर में बना है, (प्रकाशितवाक्य 21:16) ये केवल विश्वासियों के समाज के (अर्थात कलीसिया के) अपने आदर्श आकार के चिन्ह हैं जो कि आज की पृथ्वी पर परमेश्वर का निवास स्थान है। कलीसिया को पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान कहा जाता है। (इफिसियो 2:19-22)

अंक 12000 गुणनफल है 3 बार, 4 बार, 10 बार, 10 बार, 10. अंक 3 प्रतीक है परमेश्वर का (मत्ती 28:19) अंक चार इस संसार का प्रतीक है (प्रकाशित वाक्य 7:1) अंक 12 प्रतीक है परमेश्वर के लोगों का (प्रकाशितवाक्य 21:12,14) जो उद्धार के कार्य का नतीजा है। अंक 10 पूरे संसार की गिनती का प्रतीक है। (10 कँवारियाँ और 10 सेवक प्रतीक हैं संसार के सारे लोग। (मत्ती 25:1; लूका 19:13) और अंक 10X10X10 इस पृथ्वी पर यह एक सम्पूर्ण दैविक अंक है।(निर्गमन 20:6; यशायाह 60:21-22)इस लिए अंक 12000X12000X120000 यह सम्पूर्णता का एक चिन्ह जो हर पीढ़ी में और हर राष्ट्र में त्रिएक परमेश्वर के उद्धार जैसे सर्वोत्तम नतीजे लाता है। यह अंक हर पीढ़ी तक पहुँच जाएगा (रोमियो 11:4-5) कोई भी चुना हुआ है धोखा नहीं खाएगा। (मत्ती 24:24) और कोई भी चुना हुआ खोएगा नही (युहन्ना 10:28; 17:12)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः**नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:1) भी क्यूब के आकार का है (प्रकाशितवाक्य 21:16) एक चिन्ह है विश्वासियों के समाज का (अर्थात कलीसिया का) जो सर्वगुण सम्पन्न रूप में परमेश्वर के निवासस्थान नई पृथ्वी पर सदा के लिए निवास करेगी और परमेश्वर की महिमा की ज्योति में चमकती रहेगी। (प्रकाशितवाक्य 21:3,11)

अंक 12000 X 12000 X 12000 वह चिन्ह है जो परमेश्वर के सम्पूर्ण कार्य का जो त्रिएक परमेश्वर के उद्धार के कार्य के नतीजे का प्रतीक है जो उसने संसार के सभी राष्ट्रों के इतिहास में किया है। यह अंक उन चुने हुए विश्वासियो का भी प्रतीक है जो सृष्टि के आरम्भ से लेकर उसके नया बनने तक पाए गए हैं। "इसमें इस्राएल की भरपूरी"और "अन्य जातियों की भरपूरी"शामिल है और यह मसीह के दूसरे आमद से कुछ पहले ही पूरी होगी। (रोमियो 11:12,25,26;और 2 तिमुथियुस 2:19)

---

**21:22**

**<u>प्रश्न. 10 नए यरूशलेम में कोई मन्दिर क्यों नहीं है?</u>**

**नोट्सः**

**मसीह के पहले आगमन से पहलेः** पुराने नियम के समय के दौरान मन्दिर को परमेश्वर का निवास स्थान माना जाता था। और परमेश्वर की महिमा को दिन के समय बादल में और रात के समय आग में परमेश्वर का निवास माना जाता था। और यह महिमा मन्दिर के महा पवित्र स्थान में वाचा के सन्दूक के ऊपर बने करूब पर वास करती थी। (निर्गमन 25:22; 40:34-38; 1 सैमुएल 4:4; 2 राजा 19:15) परमेश्वर की महिमा की चमक केवल मंदिर की इमारत में महा पवित्र स्थान तक सीमित थी परन्तु भविष्यद्वक्ता यशायाह भविष्यवाणी कर चुके थे कि परमेश्वर स्वयं मन्दिर में

**परमेश्वर के पहले आगमन के बादः** मन्दिर परमेश्वर का निवास स्थान माना जाना बन्द हो गया (युहन्ना 2:19; प्ररितें के काम 7:44-50; 17:24-25) यरुशलेम के मन्दिर का पर्दा उपर से नीचे फट गया था। (मत्ती 27:51) यह चिन्ह देने के लिए कि आप हर विश्वासी का सीधे-सीधे पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु मसीह तक पहुँचने का अधिकार है। (इफिसियों 2:18; 3:12; इब्रानियों 4:14-16) एक मसीही के दृष्टिकोण से अब इस पूरे संसार में कोई भी पवित्र स्थान या इमारत नहीं है।

मसीह के पहले आगमन के बाद विश्वासियों का समाज (अर्थात कलीसिया) ही परमेश्वर का मन्दिर है और परमेश्वर उन में पवित्र आत्मा के रूप में वास करता है। (2 कुरन्थियों 6:16;इफिसियों 2:22; 1 पतरस 2:5) और अब परमेश्वर की महिमा की चमक कलीसिया पर स्पष्ट दिखाई देती है। (2 कुर. 3:18;मत्ती 5:16)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** परस्थिति एक दम उलटी हो जाएगीः परमेश्वर यीशु मसीह नये यरूशलेम के रूप में वह मन्दिर बन जाएगा जिसे देख सकेंगे। और तब विश्वासियों का समाज (कलीसिया) उस परमेश्वर के साथ निवास करेगी जिस ने स्वयं को यीशु मसीह में प्रकट किया था। तब कुल. 3:3-4 में जो लिखा है वह एक छुपी हुई सच्चाई नहीं रहेगा। जो भविष्यवाणी यशायाह ने की थी तब उसकी पूरी तरह से पूर्ति हो गई थी। परमेश्वर अब वे स्वयं परमेश्वर का मन्दिर बन गए हैं। वे जहाँ भी रहें वे सुरक्षित हैं और वे वहीं पर सदा आराधना और सेवा करेंगे। और तब महिमा का तेज पूरी नई पृथ्वी को प्रभावित करेगा।

---

**21:23; 22:5**

**<u>प्रश्न 11. नए नगर यरुशलेम में सूरज, चाँद या कोई और ज्योति क्यों नहीं है?</u>**

**नोट्सः**नए नगर में सूरज, चाँद या कोई और ज्योति इस लिए नहीं है क्योंकि मसीह उनकी ज्योति है। मसीह के विशेष रूप से नगर की ज्योति कहा गया है।

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** मसीह ही संसार की ज्योति है। (युहन्ना 8:12) क्योंकि उसी ने मनुष्य को परमेश्वर के दर्शन कराए थे। (युहन्ना 1:4-5; 14:9; 2 कुर. 4:6; कुलुसियो, 1:15) और अब वह विश्वासियों में सच्चे उद्धार का ज्ञान बाँटता रहता है। (युहन्ना 8:19) विश्वासी अब यीशु मसीह को अपनी आत्मिक आँखों से देखते हैं।

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** मसीह ही नई पृथ्वी पर सारे विश्वासियों के समाज (अर्थात कलीसिया) के लिए दीवट और ज्योति होगी। (प्रकाशितवाक्य 21:23) क्योंकि मसीह ही प्रकट रूप से विश्वासियों को परमेश्वर का मुख और उसके सारे गुण दिखाएगा। परमेश्वर एक आत्मा है और वह नई पृथ्वी पर प्रकट रूप से विश्वासियों के बीच यीशु मसीह के द्वारा देखी जा सकती है। और तब विश्वासी अपनी शारीरिक आँखों से भी यीशु मसीह का दर्शन पा सकेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:4)

---

**21:24-27**

**<u>प्रश्न 12. वे कौन से राष्ट्र है जो नए यरुशलेम में हैं और वे नए यरुशलेम में क्या लेकर आते हैं?</u>**

**लिख लेः**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** हर राष्ट्र से अनेक लोग यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण कर लेंगे और खुले फाटक से अन्दर प्रवेश कर लेंगे। (मत्ती 7:13-14) और वे अपने राष्ट्र का धन नगर में ले आएँगे। (यशायाह 60:11) और स्वर्गीय यरुशलेम का भाग बन जाएँगे। (मत्ती 24:14;प्रकाशितवाक्य 5:9-10) वे यीशु मसीह के द्वारा

जो भला है विज्ञान में और दवा और इलाज में, कृषि आदि में इस संसार के लिए, और समाज के लिए परमेश्वर की आराधना करेंगे। फिर वे अपनी संसकृति और संसकारों मे, कविताओं में, लेखों में, संगीत और नृत्य में, अपने निजि जीवन ( अपने चरित्र और कर्मों के लिए) भी आराधना करेंगे।

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** जब स्वर्गीय यरूशलेम नए यरुशलेम के रूप में नई पृथ्वी पर उतर आएगा तब हर जाति के लोग, हर भाषा बोलने वाले लोग, और हर राष्ट्र के लोग उस नई पृथ्वी पर सदा के लिए उन लोगों का हिस्सा बन जाएँगे जो परमेश्वर के विश्वासी लोग हैं। परन्तु परमेश्वर पर विश्वास करने वाले लोग अब पहले जासे नहीं रहेंगे और न ही कभी पहले के समान बन सकेंगे। तब इस नई पृथ्वी पर अनेक प्रकार के लोग होंगे और अनेक प्रकार के वैभव भी देखने को मिलेंगे। जो कुछ भी उनके इस पृथ्वी पर रहते हुए परीक्षाएँ हुई थीं और जहाँ वे अस्थाई रूप से ठहर गए थे संस्कृति के कारण या अग्नि परीक्षा के न्याय के कारण (मत्ती 3:11-12; 13:40-43; 1 कुर. 3:12-15; 2 पतरस 3:10) फिर भी यह महिमय और आदर के योग्य होगा। (फिलिपियों 4:8) जो भी कर्म किए गए थे, "परमेश्वर की ओर से, परमेश्वर के द्वारा और परमेश्वर की महिमा के लिए"(रोमियो 11:36; युहन्ना 15:5) वह सब व्यर्थ नहीं जाएगा। ( 1 कुर. 15:58) वह तो उनके साथ नए यरूशलेम में प्रवेश कर जाएगा। (प्रकाशितवाक्य 14:13) विचार करें उऩ अनगितनत सुन्दर गुणों के विषय में जो एक व्यक्ति मे पाए जाते हैं और उन अनेक खोए हुओं के विषय में भी विचार करे जिन को बचा लिया गया है। वे हर जाति से, अलग-अलग भाषा बोलने वालों मे से और अनेक राष्ट्रों से (प्रकाशितवाक्य 5:9-10) विज्ञान, कौशल, संगीत, गीतो, कला, लेखन, और हर तरह क काम जो परमेश्वर की महिमा करते हैं। लेकिन कुछ भी जो बुरा है नए यरूशलेम में प्रवेश नहीं कर पाएगा। (प्रकाशितवाक्य 21:27) केवल वही जिनका नाम यीशु मसीह की जीवन की पुस्तक में लिखा है वही नए यरुशलेम में प्रवेश पाएँगे। (प्रकाशितवाक्य 20:15)

---

**22:1**

**<u>प्रश्न 13. जीवन के जल की नदी का क्या अर्थ है?</u>**

**नोट्सः** आज का प्राक्रतिक स्वर्ग, पृथ्वी, और सागर हैं वे पूरी तरह से बदल जाएँगे। (रोमियो 8:21; 2 पतरस 3:10) पूरा भू-मण्डल महिमय रूप से बदल जाएगा। उस सागर के बदले जो सदा खतरा बनाए रखता है, उसके स्थान पर जीवन जल की नदी होगी। (प्रकाशितवाक्य 22:1) और यह बदलाव प्रतीक है इस बात का कि नए यरुशलेम में मनुष्य और प्रकृति का सम्बन्ध पूरी तरह से फिर से स्थापित हो जाएगा। (यशायाह 11:6-9; यहेजकेल 47:9) फिर शारीरिक रचना या प्रकृतिक रचना बिलकुल वैसे ही होगी जैसे परमेश्वर की योजना थी। (प्रेरितों के काम 3:21) तौ भी जीवन जल की नदी एक महत्तवपूर्ण प्रतीक है जो आत्मिक है।

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** जीवन जल की नदी प्रतीक है कि उद्धार के लिए सुसमचार का प्रचार सारे संसार में होगा। और यह उन सबके लिए अनन्त जीवन लेकर आएगा जो उसे उस में से पीएगा। (युहन्ना 4:10, 14; 7:38) यह नदी परमेश्वर के सिंहासन से यीशु मसीह में बहती है और यही उद्धार का प्रतीक है कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम के कार्य से मिलता है। (इफिसियों 2:8-9)

इसके लिए वर्तमान काल के क्रिया शब्दों का प्रयोग इस लिए किया गया है क्योंकि यह आज के समय में यीशु के दूसरे आगमन के पहले का कार्य है।

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** जीवन जल की नदी प्रतीक है उस उद्धार का जो सम्पूर्ण है और सर्वगुण समपन्न है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगो को नई पृथ्वी पर दिया है।

---

**22:2**

**<u>प्रश्न 14. सड़क का क्या अर्थ है?</u>**

**नोट्सः** ये शब्द जैसे नदी, सड़क और पेड़ मूल भाषा में एक वचन में लिखे हैं। पर इन के अनेक अर्थ भी हो सकते हैं। इस लिए दर्शन दिखाता है कि केवल एक नदी, एक सड़क और एक पेड़ नहीं है। लेकिन एक वाटिका है जहाँ पर पेड़ो की पंकतियाँ है और उनके बीच में से अनेक नदीँ और सड़के हैं।

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** सड़कें प्रतीक है कि उनके द्वारा हम परमेश्वर के सिंहासन तक, जीवन की नदी तक और जीवन के पेड़ तक आसानी से पहुँच सकते हैं। मध्यस्थ यीशु मसीह के द्वारा (1 तिमु. 2:5) और उसकी आत्मा के द्वारा (इफिसियों 2:18) जो प्यासा है उसके लिए एक खुला दरवाज़ा है जहाँ पर वह बिना किसी पैसे के और बिना किसी कीमत के विश्वास के साथ अन्दर आ सकता है और जल पी सकता है। (यशायाह 55:1-2) यीशु ने कहा "हे बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।" (मत्ती 11:28)

सड़कें खरे सोने की हैं जैसे आर-पार दिखने वाला शीशा तो प्रतीक है लोगों के सर्वगुण सम्पन्न चरित्र का जिसके आधार पर वे परमेश्वर के निकट जाते हैं। (युहन्ना 3:19-21; 8:12) और उनकी परमेश्वर के साथ संगति (1 युहन्ना 1:5-7) कहीं भी कुछ भी गुप्त नहीं होता है (कोई रहस्य, गोपनीय, केवल पहल करने वालों के लिए) जो परमेश्वर के निकट जाने की पहल करते है जो स्वयं को बाइबल में प्रकट करता है।

**मसीह की दूसरी आमद के बादः** सड़कें अभी भी प्रतीक हैं आसानी से परमेश्वर के सिंहासन के निकट, जीवन जल की नदी के निकट और जीवन के पेड़ के निकट पहुँचने का और विश्वास ने इसे वास्तविक्ता में बदल दिया है।

---

**22:2-3(क)**

**<u>प्रश्न 15. जीवन के पेड़ का क्या अर्थ है?</u>**

**लिख लेः**

**पाप में गिरने से पहलेः** जीवन का पेड़ वास्तविक था जो अदन वाटिका रूपी स्वर्गलोक में था जहाँ पर आदम और हव्वा अनन्तकाल तक जी सकते थे। लेकिन जब उन्होंने पाप कर लिया तब परमेश्वर ने उनको उस स्वर्गलोक से बाहर निकाल दिया था। जिससे वे सदा के लिए पाप और मृत्यु के दास बन कर जीवन जी सकें। (उत्पत्ति 2:9-11; 3:22-24) आज की इस पृथ्वी पर मनुष्य को स्वर्ग से बाहर कर दिया गया है (उस वाटिका से) वह आत्मिक रूप से मर चुका है, उसे निश्चय ही शारीरिक रूप से भी मरना होगा और वह अनन्तकाल के लिए भी मर जाएगा यदि यीशु मसीह उसे बचा न ले।

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** जीवन का पेड़ और उसकी पत्तियाँ सुसमाचार के स्वास्थ्य के लिए हितकर प्रभाव का प्रतीक है। और परमेश्वर के उद्धार के लिए भरपूरी और उस चंगाई के लिए जो आज के युग में शरीर और आत्मा को मिलती है कलीसिया की आदर्श वास्तविकता है। यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले सभी राष्ट्रों के लोगों को आत्मिक, शारीरिक, मनोभावनाओं की और अनन्त जीवन चंगाई की ज़रूरत है।

**यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बादः** जीवन का पेड़ उन सभी गहरे दाग़ों की चंगाई का सम्पूर्ण और सर्वोत्तम प्रतीक है जो हम ने पुरानी पृथ्वी पर जीते समय पाए थे। और वह निरन्तर परमेश्वर की आशिषों से जो हमें सदा हमारी ज़रूरतों को तृप्त करेंगी और हमें नयी पृथ्वी पर जीते हुए उस आनन्द से भर देंगी जिस को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है। उस नई पृथ्वी पर स्वर्गलोक (वाटिका) नगर के अन्दर होगी। और जीवन का पेड़ उस स्वर्गलोग में होगा। और हर व्यक्ति जो विजय पाएगा उसे अधिकार होगा कि वह सदा उस जीवन के पेड़ के फल को खा सकेगा।

(प्रकाशितवाक्य 2:7) वह तो आत्मिक, शारीरिक, भावनात्मक रूप से अनन्तकाल तक जीवित रहेगा। (1 कुर. 15:42-44) जीवन के पेड़ की मासिक रूप से फलवन्त होने की भरपूरी लगातार इस गारंटी है कि नई पृथ्वी पर आशीषों की भरपूरी है। "अब से कोई श्राप नहीं रहेगा।"

---

**22:3(ख)**

**<u>प्रश्न 16. परमेश्वर के सिंहासन पर कौन बैठता है?</u>**

**लिख लेः**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** परमेश्वर का राज्य इस उस का सर्वोपरी राज्य होगा जो वह सब पर करेगा आदि से अनन्तकाल तक (भजन 93:1-2:145;13; 146:10; 1 तिमिथियुस 6:15) विशेषकर यह राज्य तो परमेश्वर का सर्वोच्च राज्य होगा दो वह यीशु मसीह के माद्यम से करेगा। (मत्ती 28:18; यहुन्ना 13:3, इफिसियों 1:20-22; फिलिपियों 2:9-11; कुलुसियों 1:15-20; प्रकाशितवाक्य 1:5; 17:14; 19:16) उसका राज्य तो यीशु मसही के द्वारा उद्धार के पूरा किए कार्य पर आधारित है। मत्ती 21:39, 42-43; प्रेरितों के काम 2:36) और उस काम को विश्वासियों में पवित्र आत्मा के द्वारा कार्यशील किया गया था। (रोमियो 14:17) उस राज्य को विश्वासियों के दिलों में पहचाना जा सकता है।और उसे उनके जीवनों में कार्यशील देखा जा सकता है।(लूका 17:20-21; मत्ती 25:34-40)

परमेश्वर के राज्य के नतीजे 4 क्षेत्रों मे देखे जा सकते हैं। शुरू से आखिर तक विश्वासियों में सम्पूर्ण उद्धार,(मरकुस 10:25-26; युहन्ना 3:3-8;1 कुर. 6:9-11) विश्वासी मिल कर जब इस पृथ्वी पर एक कलीसिया बन जाएगी (मत्ती 16:18-19; इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 2:4-5, 9-10) भले काम विश्वासियों को हर सामाजिक क्षेत्र में प्रभावित करते हैं और उनके काम भले काम समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित करेंगे। (मत्ती 25:34-36, रोमियो 14:17 और अन्त में वह पूरे ब्रम्हाण्ड या नए स्वर्ग और न पृथ्वी को यीशु की दूसरी आगमन के समय देखेंगे। (1 कुर. 15:24-26; प्रकाशितवाक्य 11:15) पृथ्वी पर राज्य के आरम्भ और 1 कुर. 15:24-28 परमेश्वर के राज्य के अन्त को बताता है। अपने दूसरे आगमन के समय तक उसने मध्यस्थ का राज्य पूरा कर लिया होगा।

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** परमेश्वर का राज्य जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर होगा उसमें कोई कमी नही होगी। और वह परमेश्वर का राज्य कहलाएगी (मत्ती 25:34; और युहन्ना का 25:34; 1 कुर. 15:23-28; प्रकाशितवाक्य 11:15-18)यह कहना,"परमेश्वर ने जो अपने पुत्र यीशु मसीह के अधीन किया था वह स्वयं खुद को परमेश्वर के अधीन कर देगा। और उसका मध्यस्थता का राज्य जो उद्धार के इतिहास में 1 कुर 15:28 में शुरू हुआ था वह यीशु ने पिता परमेश्वर के हाथों में फिर से सौंप दिया था कि केवल वही सब पर अधिकारी हों। (फिलिपियों 2:9-11)" इस प्रकार यीशु समीह का मध्यस्थता का राज्य वर्तमान पृथ्वी पर समाप्त हो गया था।

परमेश्वर के अनन्तकाल का राज्य मसीह के दूसरे आगमन से परे है। लेकिन फिर भी यीशु मसीह परमेश्वर के साथ मिल कर अनन्तकाल का राज्य कर रहे हैं। (2 सैमुएल 7:13;यशायाह 9:7; 2 पतरस 1:11; प्रकाशितवाक्य 22:1-3) केवल इतना ही हुआ है कि परमेश्वर के पिता के काम और परमेश्वर पुत्र के कामों में अन्तर शेष हो गया है। यहाँ से आगे बाइबल केवल पिता और पुत्र की एकता की बात करती है। संसार का राज्य अब सदा-सदा के लिए प्रभु का राज्य और मसीह का राज्य बन चुका है।(प्रकाशितवाक्य 11:15) "सर्वशक्तिमान परमेश्वर और मेमना ही उनका मन्दिर हैं।"(प्रकाशितवाक्य 21:22) "परमेश्वर और मेमना ज्योति हैं।"(प्रकाशितवाक्य21:23)और परमेश्वर का सिंहासन और मेमने का सिंहासन नए यरूशलेम का प्रतीक होंगे। (प्रकाशित वाक्य 22:1-3)

---

**22:4**

**<u>प्रश्न 17. विश्वासी लोग परमेश्वर के चेहरे को कैसे देख सकेंगे?</u>**

**लिख लेः** परमेश्वर क महिमा को हम यीशु मसीह के मुख पर कैसे देख सकेंगे?

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** यीशु मसीह अदृष्य परमेश्वर की प्रत्यक्ष छवि है। (कुल. 1:15) परमेश्वर की महिमा की चमक और उनका सटीक रूप जो उपस्थित है (इब्रानियों 1:3; युहन्ना 1:14)
जिस किसी ने यीशु मसीह को देख लिया है उसने परमेश्वर को देख लिया है। (युहन्ना 14:9)

**यीशु मसीह के दूसरे आगमन के बादः** यीशु मसीह फिर भी अदृष्य परमेश्वर की प्रत्यक्ष छवि रहेंगे और विश्वासी लोग हर समय यीशु मसीह के चेहरे में देख सकेंगे कि परमेश्वर कौन है। वे यीशु मसीह के द्वारा सीधे परमेश्वर के साथ संगति करेंगे। वे उसकी पस्थिति में जिएंगे, सेवा और राज्य करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:3-5)

---

**22:5**
**<u>प्रश्न 18. नई पृथ्वी पर विश्वासी क्या करेंगे?</u>**

**लिख लेः**

**मसीह के दूसरे आगमन से पहलेः** विश्वासी जो इस पृथ्वी पर हैं उनको सांस्कृतिक मिशन दिए गए हैं और वह यह है कि पूरे संसार को परमेश्वर की छवि से भर दें। और सबको अपने अधीन करके जो भी रचा गया है उसे संजो कर रखें। (उत्पत्ति 1:26-18) और विश्वासियों को एक दूसरा मिशन भी दिया गया है कि जाओ और सारे जगत के राष्ट्रों में चेले बनाओ। (मत्ती 28:19)

**मसीह के दूसरे आगमन के बादः** नई पृथ्वी के लोग इस बात को जान लेंगे और अपने मूल मिशन को पूरी तरह से पूरा करेंगे। और परमेश्वर की शारीरिक रचनाओं और सभी अदभुत प्राकृतिक रचनाओं पर राज्य करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:5) और वे परमेश्वर की सेवा करेंगे और सदा उसकी आराधना करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:3)

---

**<u>प्रश्न 19. आप क्या सोचते हैं कि प्रकाशितवाक्य के 21 और 22 अध्याय आप के मसीही जीवन के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?</u>**

**सीख लेः** प्रकाशितवाक्य 21 और 22 अध्याय मुझे सिखाते हैं कि मैं उन प्रश्नों का उत्तर दे सकूँ जैसे, **"**मैं कहाँ जा रहा हूँ?**"** मैं यीशु मसीह से उसकी दूसरी आमद के समय मिलने जा रहा हूँ। उसके बाद मेरे शरीर का पुनरोत्थान होगा और फिर मेरा न्याय होगा। और तब में यीशु मसीह के रूप में बदल जाऊँगा। (फिलिपियों 3:21; 1युहन्ना 3: 1-3) और तब मैं नई पृथ्वी पर हर समय यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में उसे देखते हुए रहूँगा। वहाँ पर मैं परमेश्वर के साथ परमेश्वर की आराधना करूँगा, उसकी सेवा करूँगा और उसके साथ उसके ही राज्य में नई पृथ्वी पर राज्य करूँगा। मेरा भविष्य सचमुच में बहुत ही अदभुत और आशापूर्ण है।

---

**चौथा तरीका. लागू करना** **लागू करना**

**ध्यान देनाः** इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं?

**अपने विचार बाँटें और लिख लेः** आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख लें

जो हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से जीवन में लागु करनी हैं।

**ध्यान देः** कौन सी ऐसी बात हमें लागु करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागु करें?

**लिख लेः** यह निजि लागु करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागु करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।

(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागु कर सकता है। नीचे कुछ उदाहरणों की सूची है।

**1. उन उदाहरणो की सूची जो प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:6 से जिन का प्रयोग करना सम्भव है।**

21:1-3 मसीह के दूसरे आगमन पर नज़र रखना, कि कब नया स्वर्ग और नई पृथ्वी एक वास्तविकता बन जाएँगे।

21:4 याद रहे कि हमारे आज के आँसु और शरीर की कमज़ोरियाँ अस्थाई हैं। समपूर्ण वास्तविकता तो आगे आने वाली है।

21:7-8 एक विजयी व्यक्ति बन जाएँ।

21:16 केवल एक चीज़ की खोज करें और वह है कि जीवन में हर दिन परमेश्वर की उपस्थिति में रहें और परमेश्वर के सुन्दर गुणों, वचनों और कर्मो पर नज़र रखे और उन पर मनन करें। (भजन 27:4)

21:17 इस बात पर कभी शक न करें कि मसीह एक दीवार के समान हमारी रक्षा करता है। (युहन्ना 17:12)

21:18-21 परमेश्वर के विभिन्न प्रकार के ज्ञान की घोषणा करें। (इफिसियों 3:10; याकूब 3:17)

21:22 संसार के हर विश्वासी को परमेश्वर का मन्दिर जान कर उसका आदर करें क्योंकि परमेश्वर उन में पवित्र आत्मा के रूप में वास करता है। (इफिसियों 2:22) और इस बात की आशा करें कि परमेश्वर ही मसीह में आप का अन्तिम मन्दिर बन जाए।

21:23 लगातार जीवित परमेश्वर को हर दिन बेहतर जानने के लिए यीशु के चेहरे को देखते रहें 2 कुर. 4:6)

21:25 सब को बताएँ कि फाटक अभी भी खुले हैं और अभी भी परमेश्वर के अनुग्रह का समय है और आप बचाए जा सकते हैं।

21:26 वह सब करो जो मैं करता हूँ (मेरा अध्ययन, मेरा काम, मेरे सम्बन्ध आदि) जैसा मैं सब कुछ मसीह के लिए करता हूँ। (कुलु. 1:16; 3:17)

21:27 हर शर्मनाक और धोखा देने वाली गति विधियों को दूर कर दें।

22:2 परमेश्वर को अनुमति दें कि वह अतीत की चोटों और घावों के दागों को चंगा कर दे।

22:3 इस पृथ्वी पर यीशु मसीह के समान जीवन बिताएँ - सेवा करें ना कि सेवा करवाएँ। (मरकुस 10:45)

अपने दिल और मन को ऊपर उन चीज़ों पर लगाए जहाँ यीशु मसीह रहते हैं न कि संसार की चीज़ों पर। (कुलु. 3:1-4) सामर्थी बन जाएँ न केवल विश्वास और प्रेम में वरन आशा में भी। (इब्रानियों 6:11-12; 10:23)

**2. निजि रूप से लागु करने वाले प्रकाशितवाक्य 21:1 - 22:6 में दिए उदाहरणः**

मुझे याद रखना है कि मैं इस पृथ्वी पर एक विदेशी और अजनबी हूँ। मेरी नागरिकता तो स्वर्गीय यरुशलेम की है। यह मेरी सहायता करेगा कि मै संसार की चीज़ों में पहले से उलझा न रहूँ। मैं तो अपने लिए स्वर्ग में खज़ाना इकट्ठा करना चाहता हूँ। (मत्ती 6:19-21; कुलु.3: 1-4)

मैं चाहता हूँ कि आज इस पृथ्वी पर अपने जीवन मैं वही करूँ जो मैं भविष्य में नई पृथ्वी पर करूँगा। मैं परमेश्वर के साथ संगति करना चाहता हूँ मैं उसकी आराधना, और सेवा करना चाहता हूँ और बहुत से लोगों को और चीज़ों तो परमेश्वर के पास लाना चाहता हूँ जो परमेश्वर के राज्य के लिए महिमामय और आदर के योग्य हैं। और सब से अधिक मैं परमेश्वर के राज्य की खोज करना चाहता हूँ। (मत्ती 6:33)

---

| **पाँचवाँ तरीका - प्रार्थना** | **प्रतिउत्तर** |
|---|---|
| आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें प्रकाशितवाक्य 21:1-22:6 में हमें क्या सिखाया है।<br>(अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्यलोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।) | |

| | | |
|---|---|---|
| **5.** | **प्रार्थना** (8 मिनट) | ***मध्यस्थता***<br>**दूसरों के लिए प्रार्थना करें** |

निरन्तर 2 या 3 लोगों के दल बना कर एक दूसरे के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करे

| | | |
|---|---|---|
| **6.** | **तैयारी** (2 मिनट) | ***निर्धारित कार्य***<br>**अगले पाठ के लिए** |

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर पर तैयारी का काम करने के लिखित रूप से दे दें।

1.समर्पणः किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः युहन्ना 7:73 – 11:37 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें।

3.मुँह ज़ुबानी याद करना बाइबल में सीखे नए बाइबल के पद को याद करें "परमेश्वर के मार्गदर्शन पाने का आश्वासन।"(भजन 3:5-6) हर दिन पिछले दो बाइबल के वचनों को फिर से बोल कर देखें यह जानने को कि वे अब भी याद हैं या नहीं।

4. प्रार्थनाः इस सप्ताह किसी विशेष विषय पर प्रार्थना करें और देखें परमेश्वर इस सप्ताह आपके लिए क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)